शामली दर्पण

VOLUME 38

01/MAR/2019 TO
28/MAR/2019

ई-पत्रिका

WELCOME TO SHAMLI

पार्क में महापुरुषो की मूर्तिया

E NEWSLETTER 2

स्वच्छ सर्वेक्षण 2019

(महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती)

01/Mar/2019

स्वामी दयानन्द सरस्वती जो कि आर्य समाज के संस्थापक के रूप में पूज्यनीय हैं. यह एक महान देशभक्त एवम मार्गदर्शक थे, जिन्होंने अपने कार्यो से समाज को नयी दिशा एवं उर्जा दी. महात्मा गाँधी जैसे कई वीर पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रभावित थे. स्वामी जी का जन्म 12 फरवरी 1824 को हुआ. वे जाति से एक ब्राह्मण थे और इन्होने शब्द ब्राह्मण को अपने कर्मो से परिभाषित किया. ब्राह्मण वही होता हैं जो ज्ञान का उपासक हो और अज्ञानी को ज्ञान देने वाला दानी. स्वामी जी ने जीवन भर वेदों और उपनिषदों का पाठ किया और संसार के लोगो को उस ज्ञान से लाभान्वित किया. इन्होने मूर्ति पूजा को व्यर्थ बताया. निराकार ओमकार में भगवान का अस्तित्व है, यह कहकर इन्होने वैदिक धर्म को सर्वश्रेष्ठ बताया.वर्ष 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की. 1857 की क्रांति में भी स्वामी जी ने अपना अमूल्य योगदान दिया. अंग्रेजी हुकूमत से जमकर लौहा लिया और उनके खिलाफ एक षड्यंत्र के चलते 30 अक्टूबर 1883 को उनकी मृत्यु हो गई. स्वामी दयानंद सरस्वती वैदिक धर्म में विश्वास रखते थे. उन्होंने राष्ट्र में व्याप्त कुरीतियों एवम अन्धविश्वासो का सदैव विरोध किया. उन्होंने समाज को नयी दिशा एवम वैदिक ज्ञान का महत्व समझाया. इन्होने कर्म और कर्मो के फल को ही जीवन का मूल सिधांत बताया. यह एक महान विचारक थे, इन्होने अपने विचारों से समाज को धार्मिक आडम्बर से दूर करने का प्रयास किया. यह एक महान देशभक्त थे, जिन्होंने स्वराज्य का संदेश दिया, जिसे बाद में बाल गंगाधर तिलक ने अपनाया और स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार हैं का नारा दिया. देश के कई महान सपूत स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों से प्रेरित थे और उनके दिखाये मार्ग पर चलकर ही उन सपूतों ने देश को आजादी दिलाई.

E NEWSLETTER 4

(महा शिवरात्रि)

04/Mar/2019

When is Mahashivaratri 2019: जैसा कि हम बता चुके हैं कि 4 मार्च को महाशिवरात्रि है, जोकि सोमवार को पड़ रही है और इसी वजह से यह बेहद खास है. अब अगर आप सोच रहे हैं कि यह खास क्यों है तो आपको बता दें कि सोमवार को भगवान शिव (Lord Shiva) की पूजा करने की परंपरा काफी समय से चली आ रही है. सोमवार के दिन भगवान शिव (Lord Shiva) की पूजा करने का खासा महत्व रहता है. सोमवार के दिन लोग व्रत भी रखते हैं, जिसे सोमश्वर (Someshwar) कहा जाता है. सोमेश्वर के दो अर्थ होते हैं, पहला अर्थ चंद्रमा और दूसरा अर्थ देव. यानी जिसे सोमदेव (Somdev) भी अपना देव मानते हैं यानी शिव. शिवपुराण के मुताबिक हर सोमवार भगवान शिव की पूजा करने से काफी कष्टों से निजात पाई जा सकती है. माना जाता है कि अगर किसी व्यक्ति पर शिवजी प्रसन्न हो जाएं तो इससे उसकी कुंडली से सभी प्रकार के दोष दूर जाते हैं. इसके साथ ही गरीबी से भी छुटकारा मिल जाता है. सोमवार के दिन भगवान शिव की पूजा (Shiv Puja Vidhi) करते वक्त इन बातों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए.

महाशिवरात्रि के दिन शिव मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ जमा हो जाती है. कहते हैं कि सारे देवताओं में शिव ऐसे देव हैं, जो अपने भक्तों की भक्ति और पूजा से बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं. महाशिवरात्रि के दिन मंदिरों में काफी रौनक नजर आती है. इतना ही नहीं कुछ मंदिरों में तो भजन कीर्तन का आयोजन भी किया जाता है और झांकियों भी निकाली जाती हैं. इन झांकियों के माध्यम से शिव लीलाओं का प्रदर्शन किया जाता है.

[व्रत के दौरान इन 8 तरह के भोजन से रहें दूर]

[ये पांच तरीके देंगे व्रत वाले आलू को नया ट्विस्ट]

(होलिका दहन)

20/Mar/2019

प्राचीन पर्वों की यही सुंदरता है कि इनके पीछे छुपे पौराणिक राज हमें आकर्षित करते हैं। आइए जानें होलिका दहन का अभिप्राय और इतिहास। होलिका दहन का पर्व संदेश देता है कि ईश्वर अपने अनन्य भक्तों की रक्षा के लिए सदा उपस्थित रहते हैं।

होलिका दहन, होली त्योहार का पहला दिन, फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसके अगले दिन रंगों से खेलने की परंपरा है जिसे धुलेंडी, धुलंडी और धूलि आदि नामों से भी जाना जाता है। होली बुराई पर अच्छाई की विजय के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। होलिका दहन (जिसे छोटी होली भी कहते हैं) के अगले दिन पूर्ण हर्षोल्लास के साथ रंग खेलने का विधान है और अबीर-गुलाल आदि एक-दूसरे को लगाकर व गले मिलकर इस पर्व को मनाया जाता है।

भारत में मनाए जाने वाले सबसे शानदार त्योहारों में से एक है होली। दीवाली की तरह ही इस त्योहार को भी अच्छाई की बुराई पर जीत का त्योहार माना जाता है। हिंदुओं के लिए होली का पौराणिक महत्व भी है। इस त्योहार को लेकर सबसे प्रचलित है प्रहलाद, होलिका और हिरण्यकश्यप की कहानी। लेकिन होली की केवल यही नहीं बल्कि और भी कई कहानियां प्रचलित है। वैष्णव परंपरा मे होली को, होलिका-प्रहलाद की कहानी का प्रतीकात्मक सूत्र मानते हैं।

होली का श्रीकृष्ण से गहरा रिश्ता है। जहां इस त्योहार को राधा-कृष्ण के प्रेम के प्रतीक के तौर पर देखा जाता है। वहीं,पौराणिक कथा के अनुसार जब कंस को श्रीकृष्ण के गोकुल में होने का पता चला तो उसने पूतना नामक राक्षसी को गोकुल में जन्म लेने वाले हर बच्चे को मारने के लिए भेजा। पूतना स्तनपान के बहाने शिशुओं को विषपान कराना था। लेकिन कृष्ण उसकी सच्चाई को समझ गए। उन्होंने दुग्धपान करते समय ही पूतना का वध कर दिया। कहा जाता है कि तभी से होली पर्व मनाने की मान्यता शुरू हुई।

विंध्य पर्वतों के निकट स्थित रामगढ़ में मिले एक ईसा से 300 वर्ष पुराने अभिलेख में भी इसका उल्लेख मिलता है। कुछ लोग मानते हैं कि इसी दिन भगवान श्री कृष्ण ने पूतना नामक राक्षसी का वध किया था। इसी ख़ुशी में गोपियों ने उनके साथ होली खेली थी।

Holi ((होली))

21/Mar/2019

होली (Holi) वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय और नेपाली लोगों का त्यौहार है।
यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुनमास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों का त्यौहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। यह प्रमुखता से भारततथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्यौहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहाँ भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है।[1]पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन, जिसे प्रमुखतः धुलेंडी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन इसके अन्य नाम हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।
राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है।[3] राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है।[4] गुझिया होली का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है इस दिन कांजी के बड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है। नए कपड़े पहन कर होली की शाम को लोग एक दूसरे के घर होली मिलने जाते है जहाँ उनका स्वागत गुझिया,नमकीन व ठंडाई से किया जाता है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत खुले मे शौच से मुक्ति के सम्बन्ध में जागरूकता हेतु एक मार्मिक अपील

जागो युवा जागो स्वच्छ भारत है तुम्हारा अधिकार लेकिन पहले उठाओं पहले कर्तव्य का भार

बापू का नारा, स्वच्छ भारत हैं बनाना ।

भूमण्डल में गूंजे गान ।
मेरा भारत देश महान ।।
फिर गूजेंगा का बापू का गान ।
स्वच्छ रहे भारत का हर ग्राम ।।
कूड़ा करकट का हैं अम्बार ।
सबको मिलकर करना हैं साफ ।।
अपने कर्मो को सुधारे ।
नदियों को पवित्र बनायें ।।
स्वच्छता उन्नति का आधार हैं ।
लम्बे जीवन का सार हैं ।।
स्वच्छता आकर्षण का आधार हैं ।
स्वच्छता मोक्ष का द्वार भी हैं ।।
बच्चे बूढ़े, और जवान हैं ,
सहयोग सेतु में बंध एक साथ ।
संकल्प करे फिर एक बार ।
स्वच्छ रखेगा भारत को हर हाथ ।।
अच्छे दिनों को लाना हैं ।
भारत का मान बढ़ाना हैं ।।

स्वच्छ भारत मिशन शामली

श्री सुरेंद्र सिंह
(अधिशासी अधिकारी)

श्रीमती अंजना बंसल
(अध्यक्ष)

E NEWSLETTER 9

Contact Us

: www.fageosystems.in

: info@fageosystems.in

Tel/Fax : 01204349756